06 / 11 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विशेष युग के विशेष फल की अनुभूति

➢➢ मैं विशेष आत्मा हूँ

➳ _ ➳ स्वयं भगवान मुझे मिल गये है

→ रोज अमृतवेला परमात्मा स्वयं मुझसे मिलने केलिए आते है
→ मुझे विशेषताओं से सजा रहे है

■ मैं आत्मा प्यारे शिवबाबा की गोद में पालना ले रही हूँ

➳ _ ➳ उनके सम्मुख बैठी हूँ

→ वो मुझ पर अपने प्रेम की बरसात कर रहे हैं
→ मेरे मस्तक पर अपना हाथ रख रहे हैं

■ मुझ आत्मा के सारे अवगुण दूर हो रहे हैं

➳ _ ➳ बाबा मेरे हाथों को अपने हाथों में ले रहे हैं

→ अपनी सारी विशेषताएं
→ सारे गुण
→ मुझमें ट्रान्सफर कर रहे हैं

■ मुझ आत्मा को अपने जैसा गुणवान और विशेषताओं से भरपूर बना रहे हैं
■ अष्ट शक्तियों का मालिक बना रहे हैं

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाबा से परमात्मा विशेषताएँ धारण कर रही हूँ

→ ये विशेषताएँ परमात्मा की देन हैं
→ मुझे विश्व कल्याण के लिए इनका प्रयोग करना है

■ मैं आत्मा इन विशेषताओं के साथ उड़ रही हूँ
■ पहुँच जाती हूँ विश्व ग्लोब के ऊपर

➢➢ मैं विशेषताओं का फरिश्ता हूँ

➳ _ ➳ विश्व - ग्लोब पर बैठा हूँ

→ सभी विशेषताओं को सदा विश्व सेवा में अर्पण कर रही हूँ
→ अपने लिए उपयोग नहीं कर रही हूँ

■ जब से मुझ आत्मा को ब्राह्मण जीवन मिला है तब से बाबा द्वारा बहुत विशेषतायें प्राप्त हुई है

→ समाने की विशेषता,
→ लौकिक को अलौकिक में बदलने की विशेषता

■ ना जाने कितनी ही विशेषताओं का मालिक बनी हूँ
■ मेरे परमपिता ने मुझ आत्मा को विशेषताओं से संपन्न बनाया है

➳ _ ➳ मैं आत्मा विश्व की सारी आत्माओं को इन विशेषताओं से संपन्न बना रही हूँ

→ जिसको जो कुछ भी चाहिए
→ उसको उस शक्ति से,
→ उस गुण से संपन्न बना रही हूँ

■ सारी आत्माएँ इन विशेषताओं को प्राप्त कर बहुत खुशी का अनुभव कर रही है

■ मैं आत्मा विश्व की सारी आत्माओं को परमात्मा की विशेषताओं की अधिकारी बना रही हूँ

■ सबको गुणों का दान दे रही हूँ

➢➢ मैं इन विशेषताओं का स्वरूप बन रही हूँ

➳ _ ➳ मैं 16 कला संपन्न आत्मा हूँ

➳ _ ➳ सर्व गुण सम्पन्न हूँ

➳ _ ➳ सम्पूर्ण निर्विकारि हूँ

→ मेरा ये स्वरूप आज भी भक्तों को सम्पूर्ण निर्विकारिता का एहसास करा रहा है

- आज भी मेरे यादगार स्वरूप में मेरे भक्त, मेरे 16 कला सम्पूर्ण स्वरूप की वंदना कर रहे हैं
- अब मुझ विशेष आत्मा ने परमात्मा शक्तियां भरकर अपनी पूज्य देवी स्वरूप धारण कर रही है
- अब इस विशेष युग में विशेषता रूपी बीज से मुझ आत्मा ने सन्तुष्टता रूपी फल पा लिया।
- मैं सन्तोषी मां बन सर्व भक्तों को सन्तुष्टता का अनुभूति करा रही हूँ